श्री रामजानकी मंदिर शिलान्यास (भूमि पूजन) एवं चतुर्थ आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

चम्बल नदी के तट, केशवरायपाटन में श्री रामजानकी मंदिर के शिलान्यास और सामूहिक विवाह सम्मेलन के अवसर पर यहाँ आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। ये दोनों ही कार्य परमार्थ और समाज कल्याण के लिए है। श्री राम जानकीनाथ मंदिर के निर्माण से जहां सभी समाजों में धार्मिक-आध्यात्मिक चेतना का प्रसार होगा, वहीं सामूहिक विवाह सम्मेलन के आयोजन से सामाजिक एकता और सद्भाव बढ़ेगा।

आपका उद्देश्य बहुत पवित्र है और आपका साधन भी उतना ही पुनीत/पवित्र है। भगवान राम और माँ जानकी की पूजा मन के विकारों को दूर करके उसे निर्मल बना देती है। जैसे बरसात में पानी बरसने से भूमि की गन्दगी बह जाती है और भूमि स्वच्छ हो जाती है, ऐसे ही भगवान के स्मरण से हमारे मन की मलिनता (काम, क्रोध और लोभ जैसे विकार) दूर हो जाते हैं। मन शांत होता है। प्रसन्नता आती है, तथा भक्ति व प्रेम से हृदय परिपूर्ण हो जाता है।

भगवान श्री राम का जीवन हमें मानव कल्याण के साथ-साथ त्याग, तपस्या और सत्य की राह पर चलने की सीख देती है। भगवान श्री राम का जीवन हम सबके लिए संदेश है कि एक आदर्श भाई को कैसा होना चाहिए? एक आदर्श संतान को कैसा होना चाहिए? एक आदर्श राजा को कैसा होना चाहिए और एक आदर्श मनुष्य को कैसा होना चाहिए। श्री राम ने जो मानक स्थापित किए, उन मानकों पर हम खरा उतर पाएं, हम भगवान राम की तरह आदर्श बन पाएं; यह बहुत कठिन है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम उनके जीवन को एक दिशा, एक ध्येय मानकर उसकी तरफ़ बढ़ते हुए अपना जीवन जिए।

मानवता के जितने भी आदर्श गुण हैं; साहस, वीरता, बुद्धि, कौशल, सत्य, न्याय, विश्वास, नीति - भगवान श्री राम का जीवन हमें इन सभी मूल्यों का महत्व बताता है।

भगवान राम के जीवन को जब हम पढ़ते हैं तो उनके जीवन का एक एक प्रसंग हमें उच्च मूल्यों को धारण करने की सीख देता है। भगवान राम का सिंहासन त्याग हो, भरत का अपने भाई के लिए अगाध प्रेम हो, हनुमान जी की स्वामि-भक्ति हो, प्रभु राम की नीति हो; यह सभी मूल्य हमें सीखने को मिलते हैं।

भगवान राम और भरत का त्याग देखिए। श्रीराम सिंहासन त्यागकर वन में चले गए तो छोटे भाई भरत ने चरण पादुकाओं को राजा मानकर शासन चलाया। भगवान राम जब वापस आए, तो बड़े उत्साह से उनका राज्याभिषेक कर उन्हें अवध के सिंहासन पर बिठाया। ये भरत का अपने भाई के लिए प्रेम और समर्पण था। इसी तरह अवध में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने भी ऐसा शासन दिया कि आज भी जब हम सुशासन की बात करते हैं, तो सुशासन के लिए 'राम राज्य' का उदाहरण दिया जाता है।

जीवन में कई बार संघर्ष आता है तो आदमी घबराकर बैठ जाता है। व्यक्ति सोचता है कि जीवन में संघर्ष क्यों है? इतनी दुविधा और समस्या क्यों है? यहाँ हमें यह समझना चाहिए कि संघर्ष तो जीवन की नियति है। संघर्ष से जूझकर और सीखकर जो व्यक्ति आगे बढ़ता है वह जीवन में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करता है। रही बात संघर्ष के आने की, तो संघर्ष तो भगवान राम के जीवन में भी आए थे। जिन्हें अवध का राज्य मिलने वाला था, उन्हें 14 वर्ष का वनवास मिला। जीवन के उस संघर्ष को उन्होंने बड़ी ईमानदारी से निभाया और वनवास काटकर, जीवन संघर्षों को भोगकर वे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के रूप में जाने गए।

राम राज्य यानि सबके लिए कल्याणकारी राज्य। ऐसा राज्य जिसमें सभी को बराबरी मिले, न्याय मिले, कोई छोटा- बड़ा ना हो और समाज के सभी लोग सामूहिकता कि भावना से आगे बढ़ें। सामूहिक विवाह सम्मेलन हमारे इन उद्देश्यों को पूरा करते हैं। विवाह पर अनावश्यक खर्च नहीं होता है, जिससे आम, मध्यम और कमजोर परिवार धन को बचा पाते हैं। जो धन बचता है, उसे हम अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में लगाते हैं। हमारी पीढ़ियाँ शिक्षित और संस्कारित होती है। और यहीं पीढ़ियाँ फिर समाज और देश को आगे लेकर जाती है।